

पद चालीस का गुप्त इतिहास - संख्या बाईस

यहेजकेल संख्या तीन

Jeff Pippenger

2026-08-08

एक लाख चवालीस हज़ार के मुहरबंद किए जाने की अवधि के दौरान यहेजकेल एक याजक है। अध्याय 1 में यहेजकेल को पवित्रस्थान में ले जाया जाता है।

तीसवें वर्ष में, चौथे महीने के पाँचवें दिन, जब मैं कबार नदी के पास बन्दियों के बीच था, तब आकाश खुल गया, और मैंने परमेश्वर के दर्शन देखे। महीने के पाँचवें दिन, जो राजा यहोयाकीन की बन्धुआई का पाँचवाँ वर्ष था, यहोवा का वचन कसदियों के देश में कबार नदी के पास बूजी के पुत्र, याजक यहेजकेल के पास स्पष्ट रीति से पहुँचा; और वहाँ यहोवा का हाथ उस पर था।

और मैंने देखा, और देखो, उत्तर दिशा से एक बवंडर आया, एक बड़ा बादल, और ऐसी आग जो अपने आप में लिपटती जाती थी, और उसके चारों ओर एक ज्योति थी, और उसके मध्य में, अर्थात् आग के मध्य से, मानो अंबर के रंग के समान कुछ दिखाई देता था। फिर उसके मध्य से चार जीवित प्राणियों के सदृश कुछ प्रकट हुआ। और उनका रूप ऐसा था: उनमें मनुष्य की-सी समानता थी। और उन में से हर एक के चार मुख थे, और हर एक के चार पंख थे। और उनके पाँव सीधे पाँव थे; और उनके पाँवों के तलवे बछड़े के पाँव के तलवों के समान थे; और वे चमकाए हुए पीतल के रंग के समान दमकते थे। और उनकी चारों ओर, उनके पंखों के नीचे, मनुष्य के हाथ थे; और उन चारों के मुख और उनके पंख थे। उनके पंख एक दूसरे से जुड़े हुए थे; चलते समय वे मुड़ते न थे; वे हर एक सीधे आगे ही बढ़ते थे। और उनके मुखों के स्वरूप की बात यह है: उन चारों का दाहिनी ओर मनुष्य का मुख और सिंह का मुख था; और उन चारों का बाईं ओर बैल का मुख था; उन चारों का उकाब का मुख भी था। उनके मुख ऐसे थे; और उनके पंख ऊपर की ओर फैले हुए थे; हर एक के दो पंख एक दूसरे से जुड़े हुए थे, और दो उनके शरीरों को ढाँपे हुए थे।

और वे प्रत्येक सीधे आगे को जाते थे; जिधर आत्मा को जाना होता था, उधर ही वे जाते थे; और चलते समय मुड़ते न थे। और उन जीवित प्राणियों के स्वरूप की बात यह है कि उनका रूप जलते हुए अग्नि-कोयलों के समान, और मशालों के रूप के समान था; वह अग्नि उन जीवित प्राणियों के बीच ऊपर-नीचे होती थी; और वह अग्नि उज्ज्वल थी, और उस अग्नि में से बिजली निकलती थी। और वे जीवित प्राणी बिजली की चमक के समान दौड़ते और लौटते थे। जब मैं उन जीवित प्राणियों को देख ही रहा था, तो देखो, उन जीवित प्राणियों के पास, पृथ्वी पर, उनके चारों मुखों के अनुरूप एक-एक पहिया था। पहियों का रूप और उनकी बनावट पुखराज के रंग के समान थी; और उन चारों की एक ही सी आकृति थी; और उनका रूप और उनकी बनावट ऐसी थी, मानो एक पहिए के बीच में दूसरा पहिया हो। जब वे चलते थे, तब अपने चारों ओर की दिशाओं में चलते थे; और चलते समय मुड़ते न थे। और उनके घेरे इतने ऊँचे थे कि वे भयानक जान पड़ते थे; और उन चारों के घेरे चारों ओर आँखों से भरे हुए थे। और जब वे जीवित प्राणी चलते थे, तब पहिए भी उनके साथ चलते थे; और जब वे जीवित प्राणी पृथ्वी पर से ऊपर उठाए जाते थे, तब पहिए भी ऊपर उठाए जाते थे। जिधर आत्मा को जाना होता था, उधर ही वे जाते थे, उधर ही उनकी आत्मा को जाना होता था; और पहिए उनके सामने ऊपर उठाए जाते थे; क्योंकि उन जीवित प्राणियों की आत्मा पहियों में थी।

जब वे चलते थे, तब ये भी चलते थे; और जब वे ठहरते थे, तब ये भी ठहरते थे; और जब वे पृथ्वी से ऊपर उठाए जाते थे, तब चक्के भी उनके सामने ऊपर उठाए जाते थे; क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा चक्कों में थी। और जीवित प्राणियों के सिरों के ऊपर आकाशमण्डल की सी एक आकृति थी, जो भयानक स्फटिक के रंग की समान, उनके सिरों के ऊपर तनी हुई थी। और आकाशमण्डल के नीचे उनके पंख सीधे थे, एक दूसरे की ओर; हर एक के दो पंख थे, जो इस ओर उनके शरीर को ढाँपते थे, और हर एक के दो पंख थे, जो उस ओर उनके शरीर

को ढाँपते थे। और जब वे चलते थे, तब मैं उनके पंखों का शब्द सुनता था, जो बड़े जलप्रवाह के शब्द के समान, सर्वशक्तिमान की वाणी के समान, वचन के शब्द के समान, सेना के कोलाहल के समान था; जब वे ठहरते थे, तब वे अपने पंख नीचे कर लेते थे। और जब वे ठहरते थे, और अपने पंख नीचे कर लेते थे, तब उनके सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था, उसमें से एक वाणी सुनाई देती थी। और उनके सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था, उसके ऊपर एक सिंहासन की सी आकृति थी, जो नीलमणि के समान दिखाई देती थी; और उस सिंहासन की सी आकृति के ऊपर एक पुरुष के सदृश आकृति दिखाई देती थी। और मैंने उसके भीतर चारों ओर, उसकी कमर के ऊपर के भाग से लेकर ऊपर तक, सुर्ख धातु के रंग के समान और अग्नि के रूप के समान देखा; और उसकी कमर के नीचे के भाग से लेकर नीचे तक भी मैंने अग्नि के रूप के समान देखा, और उसके चारों ओर उज्ज्वलता थी। जैसे वर्षा के दिन मेघ में धनुष दिखाई देता है, वैसी ही वह चारों ओर की उज्ज्वलता दिखाई देती थी। यह यहोवा के तेज की समानता के दर्शन का रूप था। और जब मैंने उसे देखा, तब मैं मुँह के बल गिर पड़ा, और मैंने किसी बोलनेवाले का शब्द सुना। यहजेकेल 1:1-28.

“शोकाकुल निर्वासित भविष्यद्वक्ता यहजेकेल को, कसदियों के देश में, इस्राएल के पराक्रमी परमेश्वर पर विश्वास का वही पाठ सिखाने वाली एक दर्शन-झांकी दी गई। जब वह कहार नदी के तट पर था, तब उत्तर दिशा से एक बवंडर आता हुआ-सा प्रतीत हुआ—‘एक बड़ा बादल, और उसके भीतर लपकती हुई आग, और उसके चारों ओर एक ज्योति थी, और उसके बीच में से मानो चमकते हुए पीतल का सा रंग दिखाई देता था।’ विचित्र रूप वाले अनेक पहिए, जो एक-दूसरे को काटते हुए थे, चार जीवित प्राणियों के द्वारा संचालित हो रहे थे। इन सब से बहुत ऊपर ‘एक सिंहासन के सदृश कुछ दिखाई देता था, मानो वह नीलमणि का पत्थर हो; और उस सिंहासन के सदृश वस्तु के ऊपर एक मनुष्य के समान आकृति उसके ऊपर दिखाई देती थी।’ और उन जीवित प्राणियों की आकृति ऐसी थी, मानो वे जलते हुए अंगारों के समान, और मशालों के समान हों; वह आग उन जीवित प्राणियों के बीच ऊपर-नीचे चलती थी; और वह आग अत्यन्त तेजोमय थी, और उस आग में से बिजली निकलती थी।’ ‘और करूबों में उनके पंखों के नीचे मनुष्य के हाथ की आकृति दिखाई देती थी।’”

“पहियों के भीतर पहिए थे, ऐसी अत्यन्त जटिल व्यवस्था में कि प्रथम दृष्टि में वे यहजेकेल को सर्वथा अस्त-व्यस्त प्रतीत हुए। परन्तु जब वे चलते थे, तो अत्यन्त सुन्दर यथार्थता और पूर्ण सामंजस्य के साथ चलते थे। स्वर्गीय प्राणी इन पहियों को गतिमान कर रहे थे, और उन सब के ऊपर, महिमामय नीलम-सिंहासन पर, अनन्त सत्ता विराजमान थी; और सिंहासन के चारों ओर घेरा डाले हुए इन्द्रधनुष था, जो अनुग्रह और प्रेम का प्रतीक था। उस दृश्य की भयानक महिमा से अभिभूत होकर यहजेकेल अपने मुख के बल गिर पड़ा, तभी एक वाणी ने उसे उठ खड़े होने और यहोवा का वचन सुनने की आज्ञा दी। तब इस्राएल के लिये उसे चेतावनी का एक सन्देश दिया गया।” Testimonies, 751.

जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, उस वर्ष मैंने प्रभु को एक सिंहासन पर विराजमान देखा, जो ऊँचा और अत्यन्त उठाया हुआ था, और उसके वस्त्र का घेर मन्दिर को भर रहा था। उसके ऊपर सेराफ़ीम खड़े थे; प्रत्येक के छः पंख थे; दो से वह अपना मुख ढाँपता था, और दो से वह अपने पाँव ढाँपता था, और दो से वह उड़ता था। और एक दूसरे से पुकारकर कह रहा था, सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है। और पुकारनेवाले के शब्द से द्वार की चौखटों की नेव हिल उठी, और भवन धुँएँ से भर गया। तब मैंने कहा, हाय मुझे पर! क्योंकि मैं नष्ट हुआ; इस कारण कि मैं अशुद्ध होंटों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंटों वाली प्रजा के बीच रहता हूँ; क्योंकि मेरी आँखों ने राजा, अर्थात् सेनाओं के यहोवा, को देखा है। तब सेराफ़ीमों में से एक मेरे पास उड़ा आया, और उसके हाथ में एक दहकता हुआ अंगारा था, जिसे वह चिमटे से वेदी पर से ले चुका था। और उसने उसे मेरे मुँह पर छुआकर कहा, देख, यह तेरे होंटों को छू गया है; इसलिए तेरा अधर्म दूर हो गया, और तेरा पाप शुद्ध किया गया। फिर मैंने प्रभु का यह शब्द सुना, मैं किसे भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा? तब मैंने कहा, मैं यहाँ हूँ; मुझे भेज। यशायाह 6:1-8.

“यह दर्शन यहजेकेल को उस समय दिया गया था जब उसका मन अंधकारमय आशंकाओं से भरा हुआ था। उसने अपने पितरों की भूमि को उजड़ी हुई देखा। वह नगर जो कभी लोगों से परिपूर्ण था, अब आबाद न रहा।

उसके प्राचीरों के भीतर न तो हर्षध्वनि और न स्तुति-गीत का शब्द अब सुनाई देता था। भविष्यद्वक्ता स्वयं पराए देश में एक परदेशी था, जहाँ असीम महत्वाकांक्षा और क्रूर निर्दयता का पूर्ण प्रभुत्व था। मानवीय अत्याचार और अन्याय के विषय में जो कुछ उसने देखा और सुना, उससे उसकी आत्मा व्यथित हो उठी, और वह दिन-रात कटु विलाप करता रहा। परन्तु केबार नदी के पास उसके सम्मुख प्रस्तुत किए गए वे अद्भुत प्रतीक एक ऐसी अधिराज्यकारी शक्ति को प्रकट करते थे, जो पृथ्वी के शासकों की शक्ति से कहीं अधिक प्रबल थी। अशशूर और बाबुल के अभिमानी और क्रूर सम्राटों के ऊपर दया और सत्य का परमेश्वर सिंहासनारूढ़ था।”

भविष्यद्वक्ता को जो पहिए के समान जटिलताएँ ऐसी उलझन में संलग्न प्रतीत हुईं, वे एक अनंत हाथ के मार्गदर्शन के अधीन थीं। परमेश्वर का आत्मा, जो उसे इन पहियों को चलाते और निर्देशित करते हुए प्रकट हुआ, ने उलझन में से सामंजस्य उत्पन्न किया; इसी प्रकार समस्त संसार उसके नियंत्रण में था। महिमामय प्राणियों की असंख्य सेनाएँ उसके वचन पर तत्पर थीं कि दुष्ट मनुष्यों की शक्ति और नीति को निष्फल कर दें, और उसके विश्वासयोग्य जनों के लिए भलाई उत्पन्न करें।

“इसी प्रकार, जब परमेश्वर प्रिय यूहन्ना पर आने वाले युगों के लिए कलीसिया का इतिहास प्रकट करने वाले थे, तब उन्होंने उसे ‘मनुष्य के पुत्र के सदृश एक’ को दीपधारकों के बीच चलते हुए दिखाकर, जो उन सात कलीसियाओं का प्रतीक थे, अपने लोगों के प्रति उद्धारकर्ता की रुचि और देखभाल का आश्वासन दिया। जबकि यूहन्ना को पृथ्वी की शक्तियों के साथ कलीसिया के अंतिम महान संघर्ष दिखाए गए, उसे विश्वासयोग्यों की अंतिम विजय और छुटकारा देखने की भी अनुमति दी गई। उसने कलीसिया को उस पशु और उसकी मूरत के साथ प्राणघातक संघर्ष में लाया हुआ देखा, और उस पशु की उपासना मृत्यु के दंड की धमकी के साथ अनिवार्य की जाती हुई देखी। परन्तु युद्ध के धुएँ और कोलाहल के पार दृष्टि डालते हुए, उसने सिय्योन पर्वत पर मेम्ने के साथ एक समूह को देखा, जिनके माथों पर पशु की छाप के स्थान पर ‘पिता का नाम लिखा हुआ’ था। और फिर उसने ‘उन लोगों को, जिन्होंने उस पशु, और उसकी मूरत, और उसकी छाप, और उसके नाम की गिनती पर जय पाई थी, परमेश्वर की वीणाएँ लिए हुए काँच के समुद्र के पास खड़े’ देखा, और वे मूसा और मेम्ने का गीत गा रहे थे।”

“ये शिक्षाएँ हमारे लाभ के लिए हैं। हमें अपनी आस्था को परमेश्वर पर स्थिर रखना है, क्योंकि हमारे ठीक सामने ऐसा समय है जो मनुष्यों के प्राणों की परीक्षा लेगा। मसीह ने जैतून पर्वत पर बैठकर उन भयावह न्याय-दंडों का वर्णन किया जो उनके दूसरे आगमन से पहले घटित होने वाले थे: ‘तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की अफ़वाहें सुनोगे।’ ‘जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा; और भिन्न-भिन्न स्थानों में अकाल, और महामारी, और भूकम्प होंगे। ये सब पीड़ाओं का आरम्भ हैं।’ यद्यपि इन भविष्यवाणियों की आंशिक पूर्ति यरूशलेम के विनाश के समय हुई, तथापि उनका अधिक प्रत्यक्ष प्रयोग अन्तिम दिनों पर होता है।”

“हम महान और गंभीर घटनाओं की दहलीज पर खड़े हैं। भविष्यवाणी तीव्र गति से पूरी हो रही है। प्रभु द्वारा पर है। शीघ्र ही हमारे सामने ऐसा काल खुलने वाला है जो सब जीवित लोगों के लिए अत्यन्त गंभीर रुचि का होगा। अतीत के विवाद पुनर्जीवित किए जाएँगे; नए विवाद उत्पन्न होंगे। हमारे संसार में जो दृश्य घटित होने वाले हैं, उनका अभी तक स्वप्न में भी अनुमान नहीं किया गया है। शैतान मानवीय साधनों के द्वारा कार्य कर रहा है। जो लोग संविधान को परिवर्तित करने और रविवार-पालन को लागू करने वाली व्यवस्था सुरक्षित करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे तनिक भी नहीं समझते कि उसका परिणाम क्या होगा। एक संकट बस हम पर आ ही पड़ा है।”

“परन्तु इस महान संकट में परमेश्वर के सेवकों को अपने आप पर भरोसा नहीं रखना है। यशायाह, यहजकेल और यूहन्ना को दिए गए दर्शनों में हम देखते हैं कि पृथ्वी पर घटित होने वाली घटनाओं के साथ स्वर्ग का संबंध कितना निकट है, और जो लोग उसके प्रति निष्ठावान हैं उनके लिए परमेश्वर की चिंता कितनी महान है। संसार शासक के बिना नहीं है। आने वाली घटनाओं की योजना प्रभु के हाथों में है। स्वर्ग की महिमा ने राष्ट्रों की नियति, तथा अपनी कलीसिया के हितों को भी, अपने ही अधीन रखा है।”

“हम अपने आपको यह अनुमति दे बैठते हैं कि प्रभु के कार्य में हम अत्यधिक चिंता, कष्ट और उलझन अनुभव करें। सीमित मनुष्यों को उत्तरदायित्व का बोझ उठाने के लिए नहीं छोड़ा गया है। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना है, उस पर विश्वास करना है, और आगे बढ़ते जाना है। स्वर्गीय दूतों की अथक जागरूकता, और पृथ्वी के प्राणियों के संबंध में उनकी सेवा-कार्य में उनका निरंतर लगे रहना, हमें दिखाता है कि परमेश्वर का हाथ पहिए के भीतर पहिए का संचालन कर रहा है। दिव्य शिक्षक अपने कार्य में लगे प्रत्येक कर्मी से, जैसा उसने प्राचीनकाल में कुसू से कहा था, यह कह रहा है: ‘मैंने तुझे कमर बाँधी, यद्यपि तूने मुझे नहीं जाना।’”

“यहेजकेल के दर्शन में परमेश्वर का हाथ करूबों के पंखों के नीचे था। इसका अभिप्राय यह सिखाना है कि वही दिव्य सामर्थ्य है जो अपने सेवकों को सफलता प्रदान करती है। यदि वे अधर्म को दूर कर दें और हृदय तथा जीवन में शुद्ध हो जाएँ, तो वह उनके साथ कार्य करेगा।

“जीवित प्राणियों के बीच बिजली की तीव्रता से आना-जाना करनेवाला उज्ज्वल प्रकाश उस वेग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके साथ यह कार्य अंततः पूर्णता तक अग्रसर होगा। जो न ऊँघता है, और न सोता है, जो अपने अभिप्रायों की सिद्धि के लिए निरंतर कार्यरत रहता है, वह अपने महान कार्य को सामंजस्यपूर्वक आगे बढ़ा सकता है। जो कुछ सीमित मनुष्यों की बुद्धि को उलझा हुआ और जटिल प्रतीत होता है, उसे प्रभु का हाथ पूर्ण व्यवस्था में बनाए रख सकता है। वह दुष्ट मनुष्यों की योजनाओं को विफल करने के लिए उपाय और साधन रच सकता है, और जो लोग उसकी प्रजा के विरुद्ध अनिष्ट की युक्ति बाँधते हैं, उनकी मंत्रणाओं को वह भ्रमित कर देगा।”

“भाइयो, अब न तो शोक और निराशा का समय है, और न ही संदेह तथा अविश्वास के आगे झुकने का समय। मसीह अब यूसुफ की नई कब्र में, जो एक बड़े पत्थर से बंद की गई और रोमी मुहर से मुहरबंद की गई थी, पड़े हुए उद्धारकर्ता नहीं हैं; हमारे पास एक जीवित होकर जी उठे उद्धारकर्ता हैं। वही राजा हैं, सेनाओं के यहोवा; वह करूबों के बीच विराजमान हैं; और राष्ट्रों के संघर्ष और कोलाहल के बीच भी वह अब तक अपनी प्रजा की रक्षा करते हैं। जो आकाश में राज्य करता है, वही हमारा उद्धारकर्ता है। वह हर परीक्षा को नापता है। वह भट्ठी की उस अग्नि पर दृष्टि रखता है जो प्रत्येक आत्मा को परखने के लिए आवश्यक है। जब राजाओं के गढ़ ढा दिए जाएंगे, जब परमेश्वर के क्रोध के बाण उसके शत्रुओं के हृदयों को भेद डालेंगे, तब उसकी प्रजा उसके हाथों में सुरक्षित रहेगी।” टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 752-754.

यहेजकेल उन अभ्यर्थियों का प्रतिनिधित्व करता है जो एक लाख चवालीस हजार में सम्मिलित होने वाले हैं, और पंक्ति पर पंक्ति उसके पवित्रस्थान का अनुभव यशायाह और यूहन्ना के पवित्रस्थान के भीतर के अनुभव के साथ मेल खाता है। हम अब मन्दिर की परीक्षा में हैं, जो उन तीन परीक्षाओं में दूसरी है जो एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाती हैं। वह अवधि उस शुद्धिकरण का कार्य है जिसे वाचा के दूत द्वारा मलाकी 3 की पूर्ति में सम्पन्न किया जाता है। तीन परीक्षाओं की शुद्धिकरण-प्रक्रिया वही मलाकी की अग्निमय “भट्ठी” है “जो प्रत्येक प्राणी की परीक्षा अवश्य करेगी।” जब तीसरा स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को आया, तब वाचा का दूत अचानक अपने मन्दिर में आया और उस इतिहास की बुद्धिमान कुँवारियों को परमपवित्र स्थान में ले गया, ताकि अपने विश्वासयोग्य जनों पर मुहर लगाए; परन्तु उस इतिहास की कुँवारियों ने विद्रोह किया, और 1856 तक फिलाडेल्फियाई मिलराइट आन्दोलन बदलकर लाओदीकियाई मिलराइट आन्दोलन हो गया, और 1863 में वह लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया बन गया।

22 अक्टूबर, 1844 को जो तीसरा स्वर्गदूत अचानक आया था, उसने 1863 में अपनी उपस्थिति हटा ली, और फिर 11 सितम्बर, 2001 को लौट आया। पच्चीस वर्ष पश्चात् वह मन्दिर-परीक्षा, जिसका प्रतिरूप 22 अक्टूबर, 1844 द्वारा प्रस्तुत किया गया था, अब पुनः दोहराई जा रही है। पच्चीस, प्रतीकात्मक रूप से, दो सौ पचास का एक भविष्यवाणीगत दशमांश है, और दो सौ पचास उस इतिहास का एक प्रतीक है जो दानियेल ग्यारह की ग्यारह से पंद्रह पदों में निरूपित है। दो सौ पचास, और पच्चीस, यहेजकेल के पवित्रस्थान-दर्शन के भीतर एक चक्र है। पच्चीस, बुद्धिमानों और दुष्टों के पृथक्करण का एक प्रतीक है, जो उस तीन-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया की परिपूर्ति में है, जिसका

प्रतिनिधित्व उस शुद्धीकरण के कार्य में किया गया है जो वाचा के सन्देशवाहक द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

मत्ती पच्चीस में तीन दृष्टान्त हैं, और प्रत्येक दृष्टान्त एक लाख चवालीस हजार की मुहरबन्दी के समय बुद्धिमानों और दुष्टों के पृथक्करण की पहचान कराता है। इस अध्याय में प्रतिपादित परमेश्वर की प्रजा की आशा यह है कि वे आधी रात की पुकार के सन्देश के तेल से युक्त एक बुद्धिमान कुँवारी ठहरें। उनकी आशा यह है कि उन्हें उनके व्यक्तिगत परिवीक्षाकाल में प्रबन्ध करने के लिए दिए गए विशेष गुणों के उपयोग में उनके प्रबन्धकत्व के कारण एक विश्वासयोग्य सेवक ठहराकर न्याय किया जाए। उनकी आशा यह है कि उन्हें परमेश्वर की चरागाह की एक भेड़ के रूप में, उसकी दाहिनी ओर बैठी हुई, और उसकी बाईं ओर एक बकरी के रूप में नहीं, न्याय किया जाए। पच्चीस एक लाख चवालीस हजार की मुहरबन्दी के समय बुद्धिमानों और दुष्टों के पृथक्करण का एक प्रतीक है। पच्चीस यहजेकेल के पहियों में से एक है।

हमारी बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष में, वर्ष के आरम्भ में, महीने के दसवें दिन, उस नगर के मार गिराए जाने के चौदहवें वर्ष में, उसी दिन यहोवा का हाथ मुझ पर था, और वह मुझे वहाँ ले गया। यहजेकेल 40:1।

बंदीग्रहण का पच्चीसवाँ वर्ष 22 अक्टूबर के द्वारा निरूपित किया गया है, जिसे एक व्यवस्थागत द्वार के बंद होने के द्वारा दर्शाया गया है। 22 अक्टूबर, 1844 को एक द्वार खोला गया और एक द्वार बंद किया गया, क्योंकि दो वर्ग पृथक् कर दिए गए।

और फिलाडेल्फिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख; ये बातें वह कहता है जो पवित्र है, जो सत्य है, जिसके पास दाऊद की कुंजी है, जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता; और बन्द करता है और कोई खोल नहीं सकता; मैं तेरे कामों को जानता हूँ: देख, मैंने तेरे सामने एक खुला हुआ द्वार रखा है, और कोई उसे बन्द नहीं कर सकता; क्योंकि तुझ में थोड़ी-सी सामर्थ्य है, और तू ने मेरे वचन को माना है, और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया है। प्रकाशितवाक्य 3:7, 8.

मसीह फिलाडेल्फिया के स्वर्गदूत से कहता है कि वह उनके कार्य को जानता है, और यह कि उसने फिलाडेल्फिया की कलीसिया के सामने एक खुला द्वार रखा है। वह द्वार “दाऊद की कुंजी” के द्वारा खोला जाता है, वही कुंजी जो एलियाकीम पर रखी गई है।

और उस दिन ऐसा होगा कि मैं अपने दास हिलकिय्याह के पुत्र एल्याकीम को बुलाऊँगा; और मैं उसे तेरे वस्त्र पहनाऊँगा, और तेरे कटिबन्ध से उसे दृढ़ करूँगा, और मैं तेरे शासन का भार उसके हाथ में सौंप दूँगा; और वह यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के घराने के लिये पिता होगा। और दाऊद के घराने की कुंजी मैं उसके कन्धे पर रखूँगा; तब वह खोलेगा, और कोई बन्द न करेगा; और वह बन्द करेगा, और कोई न खोलेगा। यशायाह 22:20-22.

जिस दिन एल्याकीम बुलाया जाता है, वह दुष्ट शोबना से अलग कर दिया जाता है।

सेनाओं के प्रभु यहोवा यों कहता है, जा, इस भण्डारी, अर्थात् शब्ना के पास, जो राजभवन के ऊपर नियुक्त है, और कह, तुझे यहाँ क्या है? और यहाँ तेरा कौन है, कि तूने यहाँ अपने लिये कब्र खोदी है—जैसा कोई ऊँचाई पर अपने लिये कब्र खोदता है, और चट्टान में अपने लिये निवास-स्थान तराशता है? देख, यहोवा तुझे बलपूर्वक बन्दी बनाकर दूर ले जाएगा, और वह निश्चय तुझे लपेट देगा। वह निश्चय तुझे जोर से घुमाकर बड़े देश में गेंद के समान फेंक देगा; वहाँ तू मरेगा, और वहाँ तेरी महिमा के रथ तेरे स्वामी के घराने के लिये लज्जा ठहरेंगे। यशायाह 22:15-18.

शोबना और एल्याकीम के दृष्टान्त को पूर्ण करने वाला बुद्धिमान और मूर्ख कुंवारियों का पृथक्करण 22 अक्टूबर, 1844 को पूरा हुआ, और यह यहोवाकीन की बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष में भी पूरा हुआ, जो 22 अक्टूबर, 573 ईसा-पूर्व था। यहजेकेल अध्याय 8 में एडवेंटिज़्म के भीतर के दुष्ट, जो यरूशलेम द्वारा निरूपित हैं, सूर्य को दण्डवत् करने वाले पच्चीस पुरुषों द्वारा निरूपित किए गए हैं। यरूशलेम का विनाश संडे लॉ का प्रतिनिधित्व करता है, जो एक

सौ चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय को समाप्त करने वाला वेमार्क भी है। वह मुहरबंदी का समय 11 सितम्बर, 2001 को आरम्भ हुआ, और यीशु अल्फा और ओमेगा दोनों हैं; अतः मुहरबंदी के आरम्भ के रूप में 11 सितम्बर, 2001 संडे लॉ पर होने वाले अंत को भी प्रतिरूपित करता है।

11 सितंबर, 2001 को 1888 की मिनियापोलिस सभाओं द्वारा प्रतिरूपित किया गया था, क्योंकि सिस्टर व्हाइट यह पहचानती हैं कि जब 9/11 पर न्यूयॉर्क की विशाल इमारतें गिर पड़ीं, तब प्रकाशितवाक्य 18:1-3 की पूर्ति हुई। उस समय, जैसा कि 1888 में, उन्होंने यह चिन्हित किया कि प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशित करने के लिए उतरा। 1888 के विद्रोह को उन्होंने कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह के साथ संबद्ध किया, जिनके धर्मत्याग में भी यशस्वी दो सौ पचास पुरुष सम्मिलित हुए थे। प्राचीन इस्राएल के प्रारम्भिक इतिहास में कोरह और उसके साथियों के विद्रोह के दो सौ पचास विद्रोही, प्राचीन इस्राएल के अन्तकाल में सूर्य को दण्डवत् करने वाले पच्चीस पुरुषों के प्रतिरूप थे।

लाओदीकियाई एडवेंटवाद के पच्चीस अगुवों का रविवार के कानून के आगे झुकना और 9/11 पर दो सौ पचास का झुकना, पच्चीस के प्रतीकवाद के साथ मुहरबंदी के समय को प्रस्तुत करता है—(जो बुद्धिमानों और दुष्टों के पृथक्करण का प्रतीक है)—ताकि मुहरबंदी के समय के आरंभ और अंत को चिह्नित किया जाए। चाहे वह मूसा के समय के दो सौ पचास विद्रोही हों, या यहजेकेल अध्याय आठ के पच्चीस पुरुष, या मत्ती अध्याय पच्चीस के पृथक्करण के तीन साक्षी, या यहजेकेल चालीस में बंधुआई का पच्चीसवाँ वर्ष; पच्चीस के प्रतीक की सभी अभिव्यक्तियाँ उन तीन दो सौ पचास-वर्षीय अवधियों के साथ मेल खाती हैं, जो क्रमशः 207 BC, 313 और 2026 में अपनी समाप्ति पर पहुँचीं।

पच्चीस, कहने का तात्पर्य यह है, पच्चीस का एक धुरा है, जो पच्चीस की समस्त रेखाओं को परिपूर्णता तक ले आता है। यह राज्य की उन भविष्यद्वाणी-संबंधी कुंजियों में से एक बन जाता है जो पतरस को दी गई थीं, ताकि पद चालीस के गुप्त इतिहास में स्पष्टता लाई जा सके। यह तीन से अधिक साक्षियों द्वारा बार-बार स्थापित किया जा चुका है कि दानियेल 11 के पद दस से पंद्रह एक ऐसी रेखा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो 1989 से लेकर रविवार-विधि तक के इतिहास को समेटे हुए है, जो पद चालीस का गुप्त इतिहास है। यहूदा के गोत्र का सिंह अब यहजेकेल के पहियों की मुहरें खोल रहा है, जब वह उस गुप्त इतिहास को प्रकट कर रहा है जो अंतिम दिनों की आधी रात की पुकार के संदेश को पूर्णता तक पहुँचाएगा।

आगामी लेखों में हम यहजेकेल के उन चक्कों की पहचान करना जारी रखेंगे, जो अंतिम दिनों में मनुष्यों की जटिल पारस्परिक क्रियाशीलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस लेख के आरंभ में यहजेकेल अध्याय एक, तथा उसके साथ प्रस्तुत Testimonies, volume five का संबंधित अंश, आगे बढ़ते हुए इन लेखों में हमारे निरंतर संदर्भ-बिंदु रहेंगे। जब इन चक्कों को उनके उचित स्थान पर, और भविष्यवाणी के इतिहास के अन्य चक्कों के साथ उनके उचित प्रतिच्छेदों सहित प्रस्तुत किया जाएगा, तब हम यह प्रदर्शित करेंगे कि वे तीन सौ इक्यानबे वर्ष और पंद्रह दिन, जिन्होंने 11 अगस्त, 1840 को प्रथम स्वर्गदूत को सामर्थ्य प्रदान की, यहजेकेल द्वारा भी तीन सौ नब्बे वर्षों के रूप में निरूपित हैं, जो यरूशलेम की घेराबंदी के डेढ़ वर्ष के साथ जुड़े हुए हैं; और यह कि इस भविष्यद्वाणी संबंधी ज्योति का आगमन एक लाख चवालीस हजार के ध्वज को ऊँचा उठाए जाने की पहचान कराता है।

27 जुलाई 1299 से 1337 तक की अवधि, प्रकाशितवाक्य 9:10 के एक सौ पचास वर्षों (पाँच महीनों) के आरम्भ में अड़तीस वर्षों का प्रतिनिधित्व करती है। वह एक सौ पचास वर्ष, पद 15 के तीन सौ इक्यानबे वर्ष और पंद्रह दिनों से संबद्ध है। इस प्रकार, इन दोनों अवधियों का आरम्भ मिलकर भविष्यद्वाणी की एक रेखा बनाता है, जिसका समापन जोसिया लिच की 1838 और 1840 की भविष्यवाणी की पूर्ति में हुआ, और जिसने मिलेराइट आंदोलन के उठ खड़े होने और सामर्थ्य प्राप्त करने को चिह्नित किया। एडवेंटिज़्म के आरम्भ की वह इतिहास-घटना, रविवार के कानून से पूर्व एक पताका के रूप में एक लाख चवालीस हजार के उठ खड़े होने को चिह्नित करती है। इस प्रकार, यहजेकेल के तीन सौ नब्बे वर्ष, और यरूशलेम की घेराबंदी के डेढ़ वर्ष (1.5), उस भविष्यद्वाणी-रेखा के अंत को चिह्नित करते हैं

जो 1299 में आरम्भ हुई थी।

अगले लेख से पूर्व *Testimonies*, खंड 5 के इस अंश पर विचार करना लाभदायक होगा।